30/04/2020 (Teaching of Social Studies)
(B.Ed I[st] year)

भारत में सामाजिक अध्ययन की आवश्यकता
(Need of social studies in India)

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय समाज में अनेक क्रान्तिकारी परिवर्तन हो चुके हैं, जिन्होंने सामाजिक अध्ययन की शिक्षा की आवश्यकता प्रदर्शित की है। यहाँ स्वतः ही यह प्रश्न उपस्थित हो जाता है, कि वे परिवर्तन कौन-कौन से हैं, जिन्होंने भारतीय समाज की काया को पलट दिया है इसके उत्तर में निम्नलिखित परिवर्तनों को प्रस्तुत किया जा सकता है →

1) प्रजातान्त्रिक शासन की स्थापना (Establishment of Democratic Government)
2) औद्योगिक प्रगति एवं वैज्ञानिक आविष्कारों का प्रभाव (Progress and the Impact of scientific Invention)
3) कल्याणकारी राज्य (welfare state)
4) समाजवादी राज्य (Socialistic state)
5) सर्वोदय तथा ग्राम-पंचायत की व्यवस्था Sarvodaya and Establishment of Gram Panchayats)

Scanned with CamScanner

(i) विभिन्न समस्याएँ (Various Problems)

अरस्तू के अनुसार → "मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।"

1) प्रजातान्त्रिक शासन की स्थापना (Establishment of Democratic Government)

सदियों की परतन्त्रता के पश्चात देश को स्वतन्त्रता मिली। 15 अगस्त पुण्य राष्ट्र-पर्व बन गया, साथ ही नयी-नयी समस्याओं और उत्तरदायित्वों को भी साथ लाया। अधिकार मिले, सभी नागरिक अधिकार-मूल अधिकार, राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक अधिकार मिले, सभी नागरिक अधिकार-मूल अधिकार, राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक अधिकार और हमने स्वतन्त्रता, समानता तथा भाई-चारे का पाठ पढ़ा

इसके बाद दूसरा कदम प्रजातन्त्र की ओर बढ़ाया और 26 जनवरी 1950 को अपने राष्ट्र को एक प्रजातन्त्रात्मक गणतन्त्र घोषित किया

Scanned with CamScanner

2) औद्योगिक प्रगति एवं वैज्ञानिक आविष्कारों का प्रभाव (Industrial Poggress and the Impact of Scientific Inventions)

भारत एक कृषि प्रधान देश है स्वतन्त्रता के पश्चात् राष्ट्र के कर्णधारों ने राष्ट्र की प्रगति के लिये देश के प्राकृतिक साधनों के उपयोग पर बल दिया। इससे देश में बहुत से उद्योगों का विकास हुआ। कल-कारखाने, मिल आदि की स्थापना की गयी। इससे देश के उत्पादन में वृद्धि हुई और इसका रहन-सहन पर भी प्रभाव पड़ा।

3) कल्याणकारी राज्य (Welfare state)

भारतीय संविधान में राज्य के नीति निदेशक तत्वों का वर्णन किया गया है। अनुच्छेद 39 उस मार्ग का वर्णन करता है जिस पर चलकर कल्याणकारी राज्य की स्थापना की जा सकती है। अनुच्छेद 39 के विभिन्न भागों का उल्लेख निम्न प्रकार है—

Scanned with CamScanner

अनुच्छेद 39 (A) — "राज्य सभी नागरिकों को समान रूप से जीविका के पर्याप्त साधन प्रदान करने का प्रयास करेगा।"

(B) "राज्य देश के भौतिक साधनों के स्वामित्व और नियन्त्रण की ऐसी व्यवस्था करेगा जिससे अधिक से अधिक सार्वजनिक कल्याण हो सके।"

(C) "राज्य इस बात का भी ध्यान रखेगा कि पूँजी और उत्पादन के साधनों का इस प्रकार से केन्द्रीयकरण न हो कि सार्वजनिक हित को किसी प्रकार की हानि न हो।"

(D) "राज्य प्रत्येक नागरिक को अर्थात् सभी स्त्री और पुरुष को समान कार्य के लिये समान वेतन प्रदान करेगा।"

(E) "राज्य श्रमिक पुरुषों, स्त्रियों तथा बालकों के स्वास्थ्य तथा शक्ति तथा बालकों की सुकुमार अवस्था का दुरुपयोग नहीं होने देगा। साथ ही वह ऐसी व्यवस्था करेगा जिससे नागरिकों को आर्थिक विवशता के कारण ऐसे रोजगारों में न जाना पड़े जो उनकी आयु या—

Scanned with CamScanner

शक्ति या स्वास्थ्य के अनुकूल नहीं।"

(f) "राज्य श्रमिकों तथा किशोरों की शोषण से तथा नैतिक एवं आर्थिक परित्याग से रक्षा करेगा।"

अनुच्छेद 40 — "राज्य अपने नागरिकों के पौष्टिक आहार तथा जीवन स्तर को उच्च बनाने तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य के सुधार को अपना प्राथमिक कर्तव्य मानेगा।"

अनुच्छेद 42 — "राज्य ऐसी व्यवस्था करेगा कि सभी नागरिकों को न्यायोचित एवं मानवोचित दशायें प्राप्त हो सकें। साथ ही स्त्रियों को प्रसूति सहायता प्रदान करने का प्रयास करेगा।"

अनुच्छेद 45 — "राज्य सब बच्चों को चौदह वर्ष की अवस्था की समाप्ति तक निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने के लिये व्यवस्था करेगा।"

Scanned with CamScanner

(4) समाजवादी राज्य (Socialistic State)—

भारतीय समाज में दूसरा महत्वपूर्ण परिवर्तन यह हुआ कि उसने समाजवादी समाज की स्थापना की ओर कदम उठाया। पाश्चात्य देशों में इसको हिंसात्मक क्रान्ति द्वारा ग्रहण करने का प्रयत्न किया गया परन्तु भारतीय समाज ने इस ओर शान्तिपूर्ण कदम उठाये। उन्होंने इसको सर्वोदय तथा भूदान आदि अहिंसात्मक आन्दोलनों द्वारा ग्रहण करने का बीड़ा उठाया।

हमारे स्वर्गीय प्रधानमन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने कहा था, "मैं समाजवादी राज्य में विश्वास करता हूँ और शिक्षा के इस ध्येय की प्राप्ति के लिये प्रयत्न करना चाहिये।"

(5) सर्वोदय तथा ग्राम-पंचायतों की व्यवस्था (Sarvodaya and Establishment of Gram-Panchayatas)— विनोबा भावे ने सर्वोदय के आन्दोलन को चलाकर भारतीय समाज में महान् परिवर्तन लाने का प्रयास किया इस आन्दोलन का प्रमुख उद्देश्य समाज में समस्त लोगों का

उठानी है। सभी जन, चाहे वे किसी धर्म या जाति के हो उनके विकास के लिये अवसर दिये जाँय।

महात्मा गांधी ने कहा कि राष्ट्र की उन्नति एवं प्रगति के लिये ग्रामों की प्रगति का होना आवश्यक है।

(6) विविध समस्यायें (Various Problems) —

जिस समय देश स्वतन्त्र हुआ, उस समय उसके सामने विभिन्न समस्यायें आयी जिनका समाधान राष्ट्र की प्रगति एवं उन्नति के लिए अति आवश्यक था

एक कहावत है → "आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है।"

आर्थिक समस्यायें भी परिवर्तन के लिये महत्वपूर्ण तत्व मानी जाती है। कई क्रान्तियाँ इन्हीं के कारण हुई।

Scanned with CamScanner

माध्यमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन के शिक्षण के लिए इतिहास शिक्षण के उद्देश्य एवं आवश्यकता

1) छात्रों में इतिहास के प्रति वास्तविक अभिरुचि का विकास

2) छात्रों की स्मरण, कल्पना, तर्क, निर्णय आदि मानसिक शक्तियों का विकास

3) 'सत्यमेव जयते' की भावना का विकास

4) अतीत के आधार पर वर्तमान को समझने की योग्यता का विकास

5) स्वदेश प्रेम तथा विश्व — बन्धुत्व की भावना का विकास।

6) ऐतिहासिक घटनाओं का मानचित्रों द्वारा समझने की क्षमता का विकास।

सामाजिक अध्ययन का महत्व

स्वतन्त्रता से पूर्व शिक्षा पूर्णतया पुस्तकीय तथा सूचनात्मक थी शिक्षा मूल रूप से जीविकोपार्जन के उद्देश्यों से प्रभावित थी

सामाजिक अध्ययन की शिक्षा के महत्व को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है —

1) सामाजिक दृष्टि से सामाजिक अध्ययन का महत्व
2) वैयक्तिक दृष्टि से सामाजिक अध्ययन का महत्व

1) सामाजिक दृष्टि से सामाजिक अध्ययन का महत्व — सामाजिक दृष्टि से सामाजिक अध्ययन का महत्व निम्नलिखित कारणों से है —

(1) सामाजिक अध्ययन छात्रों में स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक है।
(2) यह सहयोगी भावना विकसित करता है।
(3) यह समाज की प्रगति के लिये मार्ग प्रशस्त करता है।
(5) यह सामाजिक जीवन को उन्नत, सफल तथा समृद्ध बनाने में परम उपयोगी है।
(6) यह साथियों के लिये सहिष्णुता, सहानुभूति तथा प्रेम की भावना विकसित करता है।

Scanned with CamScanner

(2) वैयक्तिक दृष्टि से सामाजिक अधिगम का महत्व — वैयक्तिक दृष्टि से इस अधिगम के अधोलिखित महत्व प्रस्तुत किये जा सकते हैं —

(1) सामाजिक चरित्र का निर्माण।

(2) विभिन्न सामाजिक आदतों तथा कुशलताओं का विकास किया जाता है

(3) व्यक्ति की मानसिक शक्तियों का विकास किया जाता है।

(4) व्यावहारिक समस्याओं के समाधान के लिये तैयार किया जाता है।

(5) व्यक्ति को अपने वातावरण में व्यवस्थित होने के लिये समर्थ बनाया जाता है।

Scanned with CamScanner